रजिस्ट्रेशन संख्या :– R.N.I. 36355/79
डाक पंजीकरण संख्या :– के पी सिटी– 67/2018–20

अधिकार किसको जानने के लिए भारत सरकार की वेबसाइट www.dhr.gov.in लॉगिन कर क्लिक करें अल्टरनेटिव मेडिसिन तथा गज़ट पढ़ने हेतु log in करें www.behm.org.in

चिकित्सा–विज्ञान और प्रौद्योगिक जगत में सर्वाधिक प्रकाशित होने वाला निष्पक्ष समाचार पत्र

आवश्यक सूचना

इलेक्ट्रो होम्योपैथी की सेमेस्टर परीक्षायें 29 दिसम्बर, 2020 से प्रारम्भ विस्तृत जानकारी www.upelectrohomoeopathy.net पर उपलब्ध है।

पाक्षिक

इलेक्ट्रो होम्यो मेडिकल गज़ट

पत्र व्यवहार हेतु पता :–
सम्पादक
इलेक्ट्रो होम्यो मेडिकल गज़ट
127/204 'एस' जूही,
कानपुर–208014

वर्ष–42 ● संयुक्तांक – 22 एवं 23 ● कानपुर 1 से 15 दिसम्बर, 2020 ● प्रधान सम्पादक – डा0 एम0 एच0 इदरीसी ● वार्षिक मूल्य – ₹100

इलेक्ट्रो होम्योपैथी की मान्यता हेतु केन्द्र सरकार के समक्ष पूरक प्रस्ताव प्रस्तुत

इलेक्ट्रो होम्योपैथी चिकित्सा पद्धति की मान्यता हेतु भारत सरकार स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मन्त्रालय स्वास्थ्य एवं अनुसंधान विभाग को वांछित सूचना एवं साक्ष्यों पर आधारित पूरक प्रत्यावेदन प्रस्तुत किया जा चुका है, जिसमें आशा की किरण दिखायी दे रही है कि स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग द्वारा गठित अन्तरविभागीय समिति परीक्षणोपरान्त इलेक्ट्रो होम्योपैथिक चिकित्सा पद्धति की मान्यता हेतु संस्तुति कर सकती है।

विदित हो कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी की मान्यता के सम्बन्ध में स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग द्वारा गठित अन्तरविभागीय समिति ने विगत 27 फरवरी, 2017 को अधिसूचना के अनुसार मान्यता हेतु कुछ बिन्दु निर्धारित किये थे, जिसपर निरन्तर कार्य किया जा रहा है तथा अन्तरविभागीय समिति द्वारा अपनी कई बैठकों में मान्यता के सम्बन्ध में विभिन्न दृष्टिकोण के आधार पर इलेक्ट्रो होम्योपैथी की मान्यता हेतु अपने सकारात्मक रूख का आभास कराया है, अन्ततः गत बैठक में स्पष्ट किया गया कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी शिक्षण संस्थानों एवं औषधि निर्माताओं के सम्बन्ध में जानकारी उपलब्ध करायी जाये, जिससे इलेक्ट्रो होम्योपैथी की मान्यता पर विचार किया जा सके, स्मरण रहे कि स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग द्वारा गठित अन्तरविभागीय समिति द्वारा बार–बार यह स्पष्ट किया गया है कि पूर्ण जानकारी के अभाव में किसी भी स्थिति में मान्यता नहीं दी जा सकती है समिति ने यह भी स्पष्ट किया है कि मान्यता के अभाव में सरकार का इलेक्ट्रो होम्योपैथी पर रोक लगाने का कोई प्रस्ताव नहीं है, इससे यह ता स्पष्ट हो जाता है कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी चिकित्सा एवं शिक्षा के अनवरत चलते रहने में अब कोई बाधा नहीं है।

सरकार द्वारा वांछित सूचना एवं साक्ष्यों को उपलब्ध कराने के लिए संयुक्त प्रपोजलकर्ताओं, संयुक्त संशोधित प्रपोजलकर्ताओं एवं प्रपोजलकर्ताओं के दूसरे समूह ने अपने अथक प्रयास से वांछित सूचनाओं एवं साक्ष्यों को एकत्र कर भारत सरकार स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मन्त्रालय, स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग को उपलब्ध भी करा दिया गया है, इसके संकलन में डा0 ए0 पी0 मौर्या एवं डा0 अजीत सिंह की महती भूमिका है।

JOINT BODY ELECTRO-HOMEOPATHIC PROPOSALIST COMITTEE OF INDIA

S.S. PLAZA, 148 LGF, MAHAVIR ENCALAVE-1, NEW DELHI-110045
Correspondence Add. : E-10/476, 33 Feet Road, Nehru Vihar, Delhi-94

J.B.E-H.P.C.

PROPOSALISTS

1. N.E.H.M. of INDIA, Delhi
2. I.E.H.R.S.C.,New Delhi
3. E.R.D.O.I., New Delhi
4. C.C.F.H.S.M.,W.B.
5. I.E.H.I.,W.B.
6. C.M.A.,KANPUR, U.P.
7. E.H.A.M.B.,U.P.
8. E.H.M.B.,U.P.
9. M.E.C.A.,U.P.
10. M.B.E.H.S.M.,U.P.
11. E.H.M.A.M.B.,U.P.
12. S.E.P.A.,Odisha
13. V.E.H.R.I.&J.S.V.S.
14. B.E.H.S.M.,Bihar
15. C.E.H.S.M.R.D.I.,A.P.
16. E.H.R.F(I),H.P.
17. M.P.R.D.O.E.H.,M.P.
18. B.A.P.A.I.,M.P.
19. E.H.M.O.I.,Kerala

Date : 07.11.2020

To
Sri D. R. Meena
Deput Secretary
Department of Health Research
Ministry of Health & Family Walfare
ICMR Building, 2nd Floor
1 Red Cross Road, New Delhi

Sub: Submission of Supplementary ducuments of 16.12.1019, desired by IDC in the meeting held on 27.05.2019 with the view to recognize Electropathy / Electrohomeopathy Medical System.

Respected Sir,

This has reference to your department's letter No. U-11018/02/2017-HR (Vol-IV)/8009655 dt. 03.07.2019 forwarding therewith minutes of the meeting on the subject cited above. Though almost all essential and desired documents focused in the meeting i.e. scientific concepts and data of the development of the system and evidence etc. available in Electrohomeopathy organizations have already been furnished by Joint Body previously so desired by IDC.

On 16.12.2019 on behalf of all proposalists I had submitted a joint proposal along with details of all proposalist who were the part of the first and second meetings . Some parts of the supplementary proposal could not be submitted

Hence, I on behalf of all Joint Body Proposalist now I am submitting the supplementary documents of organization which includesn Details of some organizations with their courses and curriculum, list of manufacturers and suppliers / sellers of Electrohomeopathic medicines and some published scientific papers.

PLEASE READ THIS SUPPLEMENTARY PROPOSAL WITH THE SUBMITTED PROPOSAL ON 16.12.2019 TO YOUR DEPARTMENT.

Looking forward to your kind co-operation.

With regards.

Proposal prepared & Compiled by :

Dr. Anand Prasad Maurya
Dr. Ajit Singh

Yours sincerely,

Dr. KULDIP TIWARI
(Representative of Joint Proposalist)

एकत्र सूचनाओं एवं साक्ष्यों को प्रस्तुत करने में जिन–जिन लोगों ने सहयोग किया है उनकी भूमिका भी इनसे कम नहीं हैं, सभी प्रपोजलकर्ताओं के प्रयास सराहनीय हैं तथा उनके इन प्रयासों का फल भी इलेक्ट्रो होम्योपैथी की मान्यता को पूर्णतः दिलायेगा।

इस प्रयोजन में इलेक्ट्रो होम्योपैथिक औषधि निर्माताओं की भूमिका भी कुछ कम नहीं है, इनके द्वारा इलेक्ट्रो होम्योपैथी के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी जा रही है, किसी भी चिकित्सा पद्धति की मान्यता के लिए औषधि एवं चिकित्सा दोनों महत्वपूर्ण अंग हैं, इलेक्ट्रो होम्योपैथी की मान्यता के लिए सरकार द्वारा मापदण्डों के रूप में केवल और केवल इलेक्ट्रो होम्योपैथी की शिक्षा एवं चिकित्सा को ही केन्द्रित कर दिया गया है अन्तर विभागीय समिति द्वारा यह अपेक्षा की जा रही है कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी अपनी शिक्षा तथा औषधि निर्माण की मानक विधि को उनके समक्ष प्रस्तुत करे जिससे इलेक्ट्रो होम्योपैथी की मान्यता हेतु संस्तुति की जा सके।

स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग द्वारा गठित अन्तरविभागीय समिति को संयुक्त प्रपोजलकर्ताओं,संयुक्त संशोधित प्रपोजलकर्ताओं एवं प्रपोजलकर्ताओं के दूसरे समूह द्वारा जो पूरक प्रत्यावेदन दिया गया है उसमें वांछित उन सभी सूचनाओं एवं साक्ष्यों का समावेश किया गया है जिनकी स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग द्वारा गठित अन्तरविभागीय समिति द्वारा मांग की गयी है इस पूरक प्रत्यावेदन को इस प्रकार तैयार किया गया है जैसा कि उनके द्वारा अपेक्षित है।

निर्माण का उपयुक्त समय

इलेक्ट्रो होम्योपैथी की मान्यता हेतु गठित अन्तरविभागीय समिति द्वारा वांछित की पूर्ति हेतु पूरक प्रत्यावेदन प्रस्तुत किया जा चुका है जिसमें उन तमाम वांछित बिन्दुओं की पूर्ति संयुक्त प्रपोज़लकर्ताओं एवं संयुक्त संशोधित प्रपोज़लकर्ताओं तथा प्रपोज़लकर्ताओं के दूसरे समूह द्वारा प्रयास किया गया है जिसके माध्यम से समिति को उन तमाम सूचनाओं एवं साक्ष्यों से अवगत कराया गया है, ऐसी आशा है कि अन्तरविभागीय समिति के सदस्यों के द्वारा पूर्व में जो सकारात्मक रूख अपनाया गया है उसी प्रकार इस पूरक प्रत्यावेदन पर भी विचार कर अपना दृष्टिकोण बनायें रखेंगे और जनहित में कल्याणकारी अधिशाषी आदेश जारी करने हेतु अपनी संस्तुति सरकार को करेंगे।

देश में चारों तरफ इलेक्ट्रो होम्योपैथी औषधि निर्माणशालाओं के निर्माण हेतु युद्ध स्तर पर कार्य किया जा रहा है कुछ राज्यों में इलेक्ट्रो होम्योपैथी संस्थाओं/संगठनों एवं कम्पनी द्वारा शिलान्यास व लोकापर्ण भी वरिष्ठ चिकित्सकों एवं राजनेताओं द्वारा कराये गये हैं, यह इलेक्ट्रो होम्योपैथी के विकास में शुभ संकेत हैं अनेक संस्थाओं/संगठनों द्वारा औषधि पादपों के उत्पादन के लिए खेती आदि का भी प्रबन्ध किया जा रहा है, इलेक्ट्रो होम्योपैथी समाज को पूर्ण विश्वास है कि शीघ्र ही सरकार द्वारा इलेक्ट्रो होम्योपैथी को वह स्थान प्राप्त होने वाला है जिसकी बहुत लम्बे समय से हम सभी इलेक्ट्रो होम्योपैथ प्रतीक्षा कर रहे हैं इस निमार्ण कार्य में वे संगठन भी लगे हैं जिन्होंने इलेक्ट्रो होम्योपैथी से लगभग किनारा कर लिया था उन्हें भी यह आभास होने लगा है कि शीघ्र ही इलेक्ट्रो होम्योपैथी अपनी पूर्ण क्षमता के साथ जन सेवा में अपना योगदान देगी उन्हें विश्वास होने लगा है कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी को सरकारी संरक्षण अवश्य मिल जायेगा इस कार्य में संयुक्त प्रपोज़लकर्ताओं एवं संयुक्त संशोधित प्रपोज़लकर्ताओं तथा प्रपोज़लकर्ताओं के दूसरे समूह की महत्ती भूमिका है, संयुक्त प्रपोजलकर्ताओं एवं संयुक्त संशोधित प्रपोजलकर्ताओं तथा प्रपोजलकर्ताओं के दूसरे समूह की भूमिका को देखते हुए तमाम सारी नवउदित संस्थायें/संगठन तथा चिकित्सक एंव तथाकथित वैज्ञानिक भी अपनी भूमिका निभाने के लिए तत्पर हैं, तत्परता तो होनी चाहिये किन्तु उचित दिशा में हो तो ठीक है यदि दिशा ठीक नहीं होगी तो फिर जितने निकट आये हैं उतने ही दूर हो जायेंगे इस बात का सभी को ध्यान रखना चाहिये, सोशल मीडिया के माध्यम से जो भी समाचार प्राप्त हो रहे हैं उससे ऐसा प्रतीत होता है कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी समाज पूरी तरह जागरूक है तथा लक्ष्य को प्राप्त करने में अब कोई कसर छोड़ना नहीं चाहता है और यह उचित भी है इतने पास होकर भी किसी अकारण फिर लक्ष्य से दूर हो जायें यह इलेक्ट्रो होम्योपैथी के हित मे नही होगा।

औषधि निर्माणशालाओं की सीापना, पादपों का उत्पादन तथा संयन्त्रों की स्थापना ऐसी रीति से की जाये जो मानकों के अनुरूप हो जिसको सहजता एवं सरलता से दिखाया जा सके और कुशल एवं अनुभवी कार्मिकों की नियुक्ति की जाये जो अपने कार्य मे विशेषज्ञ एवं दक्ष हों तथा निरीक्षणकर्ताओं एवं सरकारी प्रतिनिधियों को आसानी से अपनी बात बता भी सकें जिससे उनके द्वारा किये जा रहे कार्यों का सही मूल्यांकन हो सके, जिससे इलेक्ट्रो होम्योपैथी को उचित लाभ मिल सके, यही समय है कि हम अपनी उचित कार्य पद्धति एवं कार्यशैली से संयुक्त प्रपोज़लकर्ताओं एवं संयुक्त संशोधित प्रपोजलकर्ताओं तथा प्रपोजलकर्ताओं के दूसरे समूह को सहयोग देते हुए अन्तरविभागीय समति को संतुष्ट कर सकते हैं यदि हम ऐसा करने में सफल होते हैं तो भारत सरकार स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मन्त्रालय स्वास्थ्य एवं अनुसंधान विभाग द्वारा 28 फरवरी, 2017 को गठित अन्तरविभागयी समिति द्वारा निर्धारित मापदण्ड को पूर्ण करते हुए इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिए अधिशाषी आदेश प्राप्त करने में सफल होंगे और इस स्तर पर इलेक्ट्रो होम्योपैथी को शासकीय संरक्षण प्राप्त हो सकेगा एवं सरकार द्वारा 28 फरवरी, 2017 से की जा रही कार्यवाही पूर्ण हो सकेगी।

इलेक्ट्रो होम्योपथी संस्थाओं /संगठनों द्वारा यदि इस समय कोई चूक की गयी तो हमें पुनः नये सिरे से प्रयास करने पड़ सकते हैं और अब तक किये गये तमाम कार्य तथा निर्माण का कोई अर्थ नहीं रहेगा अस्तु संयुक्त प्रपोज़लकर्ताओं एवं संयुक्त संशोधित प्रपोजलकर्ताओं तथा प्रपोजलकर्ताओं के दूसरे समूह को चाहिये कि वह अपने स्तर से भी वह कार्य करें जिससे उनके द्वारा किये गये प्रयासों को पूर्णतः प्राप्त हो, उन्हें इस कार्य में जिन जिन से सहयोग एवं समर्थन की अपेक्षा है खुले मन से उनसे बात करके उनसे प्राप्त करें, यही उचित समय है ! जब वह अपने आपको तथा इलेक्ट्रो होम्योपैथी को स्थापित करने के लिए प्रयास करें जिससे इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिए उचित वातावरण निर्मित हो सके तथा पैथी को सरकारी संरक्षण भी मिल सके।

भारत सरकार स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मन्त्रालय स्वास्थ्य एवं अनुसंधान विभाग द्वारा गठित अन्तरविभागीय समिति की गत बैठकों की कार्यवाही की सकारात्मकता को दृष्टिगत रखते ही देश में वृहद स्तर पर औषधि निर्माणशालाओं एवं पादप उत्पादन की व्यवस्था होनी ही चाहिये, संयन्त्र लगाने वाले आश्वस्त हैं कि सरकार इलेक्ट्रो होम्योपैथी को कार्य का अवसर अवश्य प्रदान करेगी जिससे देश की जनता को स्वास्थ्य लाभ के साथ साथ इलेक्ट्रो होम्योपैथी के चिकित्सकों को स्वरोजगार का अवसर प्राप्त होगा जो देश के यशस्वी प्रधानमंत्री का आत्मनिर्भर भारत का आवाहन है और लोकल को वोकल की प्ररिकल्पना को साकार करेगा।

बोर्ड ऑफ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0

(स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय भारत सरकार द्वारा आदेश प्राप्त, इकमाई द्वारा अनुमोदित)

8— लालबाग, कमला शर्मा मार्ग, लखनऊ—226001

प्रशा0 कार्यालय : 127/204 "एस" जूही, कानपुर—208014

website- www.behm.org.in Email: registrarbehmup@gmail.com

प्रवेश सूचना

F.M.E.H. दो वर्ष (चार सेमेस्टर) — इण्टरमीडियेट अथवा समकक्ष

G.E.H.S. चार वर्ष+(1 वर्ष इन्टर्नशिप) — 10+2 जीव विज्ञान अथवा समकक्ष

P.G.E.H. दो वर्ष — G.E.H.S अथवा चिकित्सा स्नातक

C.E.H. एक वर्ष — हाई स्कूल अथवा समकक्ष

A.C.E.H. एक सेमेस्टर — किसी भी चिकित्सा पद्धति में न्यूनतम दो वर्ष का पाठ्क्रम उत्तीर्ण (इलेक्ट्रो होम्योपैथी 30 अप्रैल, 2004 से पूर्व/पैरा मेडिकल /किसी राजकीय चिकित्सा परिषद द्वारा पंजीकृत/ सूचीकृत चिकित्सक)

विस्तृत जानकारी हेतु बोर्ड की अधिकृत संस्थाओं से सम्पर्क करें अथवा **www.behm.org.in** पर log in करें।

LIST OF AUTHORISED INSTITUTIONS

Code	Name of InstituteAddress & District	Name of Principal	Name of Manager & Mobile No.
1	Ashish Electro Homoeopathic Medical Institute, Chajlapur, Po I.T.I.,Door Bhash Nagar, Raibareli	Dr. P.N. Kushwah	Dr. P.N. Kushwaha , 9415172119
3	Awadh Electro Homoeopathic Medical Institute, Shri Om Sai Dham,Indirpuri Colony,Sitapur Road, Lucknow	Dr. R. K. Kapoor	Smt. Sunita Kapoor , 9336819078
4	Indira Gandhi Electro Homoeopathic Medical Institute, Near Bhagya Chungi, Naya Mal Godam Road, Pratapgarh	VACANT	VACANT
5	Bhagwan Mahaveer Electro Homoeopathic Institute, Pas Dameha, Jaunpur	Dr. Pramod Kumar Maurya	Smt. Sushila Maurya , 9451162708
6	Maa surja Devi Electro Homoeopathic Medical Institute, 2837 - Maharana, Lakhimpur	Dr. R. K. Sharma	R.K. Sharma , 8115849078
7	Mahoba Electro Homoeopathic Institute, Behind Block Office Subhash Nagar, MAHOBA-210427	Dr. Ajai Bansaiya	Smt. Rajni Awasthi , 9428896181
11	Chandpur Electro Homoeopathic Medical Institute, Anjan Shaheed, Azamgarh	Dr. Mushtaq Ahmad	Dr. Iftekhar Ahmad,9415368183
13	Azad Electro Homoeopathic Medical Institute, Kintoor, Barabanki	Dr. Habib-ur- Rahman	Dr. Habib-ur-Rehman, 8052791183
14	Fatehpur Electro Homoeopathic Medical Institute, Devigani, Fatehpur	VACANT	Dr. Afzal Ahmad Kazmi, 9450032961
15	Electro Homoeopathic Medical Institute, Mahmaashah, Near Charkhamba,Shahjahan pur	Dr. Ammar-Bin-Sabir	Dr.S.A. Siddique, 9336034277
16	Shahganj Electro Homoeopathic Medical Institute, Behind Mahila Hospital, Diwan Khadi,Shahganj, Jaunpur	Dr. S. N. Rai	Dr. Rajendra Prasad, 9450088327
17	Prema Devi Electro Homoeopathic Medical Institute, Siddharth Children Campus, Arya Nagar, Siddharth Nagar	Dr. Ved Prakash Srivastav	Dr. V.P. Srivastav 9415668294
18	Bundel Khand Electro Homoeopathic Medical Institute, Campus Shri Lakhan Smarak Kanya Jr.H. School 1983 Y-4 Dhobi Pulia, Hanumant Vihar, NaubastaKANPUR	Dr. Pramod Kumar singh 9307198994	Mr. Rahul Bajpai, 9660466389

LIST OF AUTHORISED STUDY CENTRES

Code	Head of Centre	Address	District	Mobile No	E-mail
51	Dr. Adil M. Khan	Parsauni Kala,Padrauna	KUSHI NAGAR	9936131968	Whatsapp No. 7985383850
52	Dr. Pradeep Kumar Srivastava	6/366 Tube Well Colony	DEORIA	9415826491	
53	Dr. Bhoop Raj Shrivastava	120-Basheerganj	BAHRAICH	9451786214	
55	Dr. Ayaz Ahmad	Beneath K.G.S. Gramin Bank, Walidpur	MAU	9305983906	
56	Dr. Gaya Prasad	Aarti Electro Homoeopathic Study Centre, Barkhera, Kalpi	JALAUN	8874429538	
57	Dr. N. Bhushan Nigam	B.K.E.H. Study Centre, Pathana	HAMIRPUR	9889426312	
59	Dr. Mohammad Israr Khan	Araw Road, Sirsaganj	FIROZABAD	9634503431	
60	Dr. Mohd. Akhlak Khan	128- Katra Purdal Khan	ETAWAH	6396361883	
61	Dr. Shiv Kumar Pal	Prem Nagar, Dak Banglow Bye Pass Road	FIROZABAD	9027342885	
62	Dr. Pundreek Tripathi	Hameed Nagar Ward No-3, Nautanwa	MAHARAJGANJ	7398941680	mpac31@gmail.com
63	Dr. Ram Autar Kushwaha	Kushwaha Electro Homoeopathic Clinic & Study centre	KANPUR	9793261649	

LIST OF AUTHORISED STUDY/GUIDENCE CENTRES OTHER STATE

Code	Head of Centre	Address	District	Mobile No	E-mail
81	Dr. Devendra Singh	374/4 Shahid Bhagat Singh Colony, Karawal Nagar	DELHI-110090	8873808868	
82	Dr. Pankaj Kumar	Kaithi P.S. Chautham	KHAGARIA-851201	7549417934	
83	Dr. Vikas	303/6 Gyan Nagar, Purkhas Road	SONEPAT-131001	9636300426	7302853934

LIST OF AUTHORISED EXAMINATION CENTRES

Code	Head of Centre	Address	District	Mobile No	E-mail
91	Dr. P.K. Ragahav	Khurja	BULAND SHAHAR	9837897021	
92	Dr. S.K. Saxena	Parker College Road	MORADABAD	8171866606	
93	Dr. Rajesh	Garh Mukteshwar	HAPUR	8958861864	

Registrar

प्रवेश व परीक्षा का कैलेण्डर

F.M.E.H. की परीक्षायें सेमेस्टर वाइज वर्ष में 4 बार होंगी, C.E.H. & A.C.E.H. की वर्ष में 2 बार, जो इस प्रकार है :- **March , June , September and December**

F.M.E.H. / C.E.H./A.C.E.H. Semester Cycle.

Enrolment	Examination	Result
Up to 30th. January	Last Week of June	Last week of July
Up to 30th. April	Last Week of September	Last week of October
Up to 30th. July	Last Week of December	Last week of January
Up to 30th. October	Last Week of March	Last week of April

G.E.H.S & P.G.E.H. Annual Cycle

Enrolment	Examination	Result
Up to 30th. July	March	Last week of April

डा0 सिन्हा ने कार्य को सदैव महत्व दिया – डा0 इदरीसी

इलेक्ट्रो होम्योपैथी को वस्तुतः यदि हम स्थापित करना चाहते हैं तो हमें कार्य करना होगा क्योंकि सफलता का मूलमंत्र कार्य में छिपा होता है। मनुष्य का जन्म लेना और कालकल्वित होना सामान्य प्रक्रिया है, जो आया है ! वह जायेगा ही !! उसके किये हुये कार्य सदैव याद किये जाते हैं और उनसे प्रेरित होकर भविष्य की नींव रखी जाती है, इतिहास बताता है कि कर्मों से ही व्यक्ति महान बनता है यह विचार इलेक्ट्रो होम्योपैथी के महान चिकित्सक डा0 नन्दलाल सिन्हा की जयन्ती पर आयोजित कार्यक्रम में डा0 एम0 एच0 इदरीसी चेयरमैन, बोर्ड ऑफ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 ने व्यक्त किये, डा0 इदरीसी ने कहा कि जो व्यक्ति महान होते हैं उनकी महानता के पीछे उनके किये गये कार्य ही होते हैं और यदि वह कार्य जनहित में किये गये होते हैं तो सदियों तक उन्हें याद किया जाता है, ऐसा नहीं है कि स्व0 नन्दलाल सिन्हा के पहले इलेक्ट्रो होम्योपैथी में कार्य नहीं हुआ था पहले भी इलेक्ट्रो होम्योपैथी के क्षेत्र में योग्य व महान चिकित्सकों ने इलेक्ट्रो होम्योपैथी के विकास के लिए कार्य किये हैं।

डा0 नन्दलाल सिन्हा ने वह कार्य किये जिससे स्वतन्त्र भारत में इलेक्ट्रो होम्योपैथी को एक सम्मानजनक स्थान प्राप्त हुआ, आज उनके कार्यों की प्रासंगिकता फिर बढ़ गयी है क्योंकि अब वह समय आ गया है जब अपने अस्तित्व की रक्षा करनी है तो कार्य के द्वारा समाज एवं सरकार के समक्ष अपनी उपयोगिता सिद्ध करनी होगी।

डा0 सिन्हा ने अपनी प्रैक्टिस से अपनी एक अलग पहचान बनाई उन्होंने कैंसर जैसे असाध्य रोग पर इलेक्ट्रो होम्योपैथी की दावेदारी बतायी, साथ–साथ रोगियों को लाभ भी दिया कुष्ठ जैसे गम्भीर रोग पर भी डा0 सिन्हा ने इलेक्ट्रो होम्योपैथी की उपयोगिता सिद्ध की, अब हम सब चिकित्सकों को भी मिलकर उस पुरानी दावेदारी को सिद्ध करके दिखाना है, डा0 इदरीसी ने अतीत का स्मरण करते हुए बताया कि स्व0 सिन्हा के काम करने का ढंग अलग ही था वह बहुत विश्वासपूर्वक अपनी पैथी पर भरोसा करते थे, उन दिनों कैंसर के नाम से लोग काँपते थे, कैंसर जानलेवा बीमारी हुआ करती थी, आज की तरह उत्कृष्ट मशीनें भी नहीं थीं और न ही कीमोथेरेपी का जन्म हुआ था, कोबाल्ट और रेडियम की किरणों से रोगियों के रोगग्रस्त स्थान पर सिंकायी की जाती थी, बात आठवें दशक की है जब कानपुर जैसे शहर में डा0 सिन्हा की बड़ी–बड़ी होर्डिंगे लगा करती थीं जिनमें हाथ का पंजा बना होता था बांई तरफ और दांई तरफ लिखा होता था ठहरिए ! कोबाल्ट और रेडियम रेज़ लगवाने से पहले कैंसर रोगी मिलें !! यह यहाँ पर लिखने का मतलब यह है कि डा0 सिन्हा मान्यता से ज़्यादा काम करने पर ध्यान देते थे उनका मानना था कि काम बोलता है।

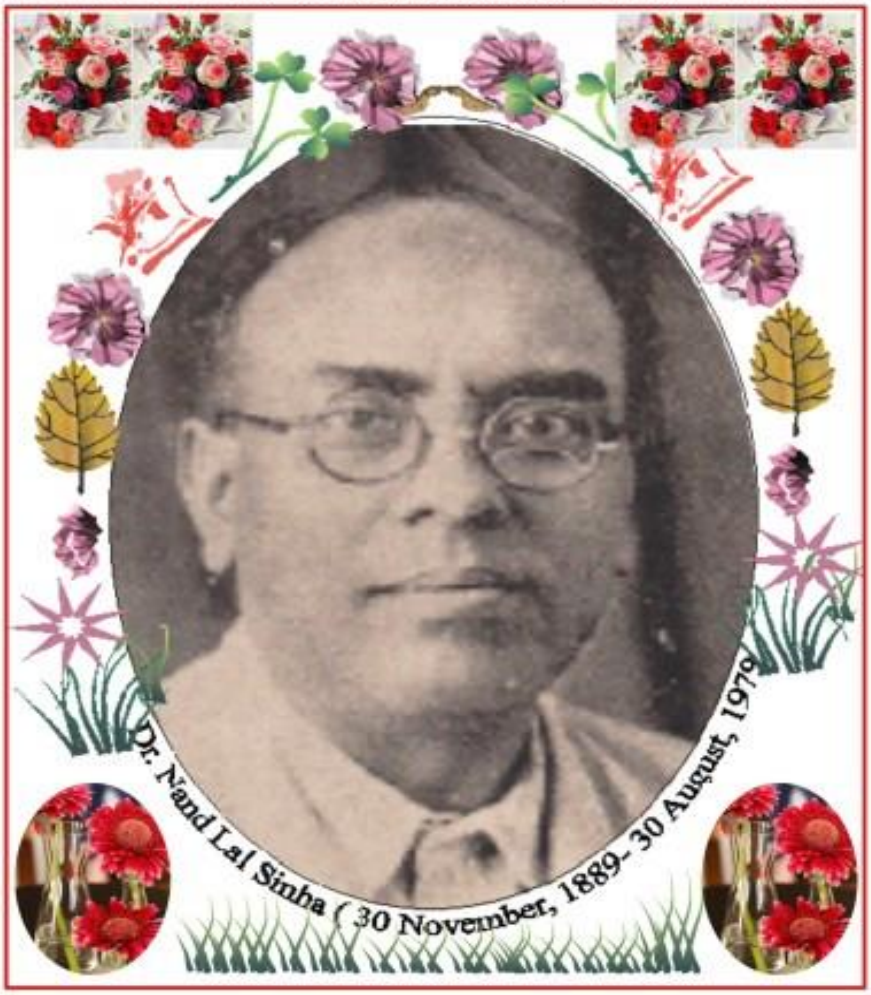

हम काम के दम पर ही मान्यता पायेंगे !
मान्यता मांग कर नहीं मिलती, कार्य के परिणामों से मिलती है !!

इसका जीता जागता उदाहरण उन्होंने प्रस्तुत किया, सरकार द्वारा इलेक्ट्रो होम्योपैथी की उपयोगिता जाँच के लिए दिये गये कुष्ठ रोगियों के ऊपर इलेक्ट्रो होम्योपैथी की औषधियों का प्रयोग कर उन्हें आराम दिलाया और सरकार को विवश किया कि सरकार इलेक्ट्रो होम्योपैथी की उपयोगिता को स्वीकारे, इसी का परिणाम था कि 27 मार्च, 1953 का वह अर्धशासकीय पत्र जो उत्तर प्रदेश सरकार ने इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिए जारी किया था, यह पत्र सिद्ध करता है कि कार्य की महत्ता श्रेष्ठ है, दुर्भाग्य से आज कार्य के स्थान पर माँगों पर ज़्यादा ज़ोर दिया जा रहा है, मान्यता एक ऐसा मुदा बना दिया गया है और ऐसा वातावरण तैयार कर दिया गया है कि जैसे बिना मान्यता के कार्य ही नहीं किया जा सकता है, जबकि सत्य यह है कि पहले की तुलना में आज कार्य करने के ज़्यादा अवसर हैं, औषधियों की उपलब्धता भी बढ़ी है माँग और पूर्ति का अनुपात बढ़ रहा है, लोगों की कार्य के प्रति उदासीनता है तो आइये आज के दिन हम सब चिकित्सक यह संकल्प लें कि इतना कार्य करेंगे जिससे सरकार हमें मान्यता अवश्य प्रदान करेगी, आपको बता दें कि डा0 नन्दलाल सिन्हा का जन्म 30 नवम्बर, 1889 को हुआ था और पूरा देश 30 नवम्बर को सिन्हा जयन्ती के रूप में मनाता है।

कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए बोर्ड ऑफ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 के रजिस्ट्रार डा0 अतीक अहमद ने कहा कि डा0 इदरीसी ने जो वास्तविक दृश्य अपने वक्तव्य के माध्यम से प्रस्तुत किया हैं निः सन्देह उस पर चलकर ही सफलता अर्जित की जा सकती है, भावनाओं के लिए स्थान तो है लेकिन कर्तव्यों पर भावनायें हावी नहीं होनी चाहिये, हर व्यक्ति को अपनी योग्यता का मान होता है, हर चिकित्सक को अपनी क्षमतानुसार चिकित्सा करनी चाहिये यदि कार्य में कोई कठिनायी आये तो अपने से वरिष्ठ चिकित्सक से पूछने में कोई परहेज़ नहीं करना चाहिये, एक दूसरे से पूछने में ज्ञानवृद्धि ही होती है, कोई छोटा बड़ा नहीं होता है, हमें किसी अन्य चिकित्सा पद्धति से स्वयं की तुलना नहीं करनी चाहिये, हम जिस पद्धति के हैं उसी पर गर्व करते हैं और गर्व से कार्य करना चाहिये, आज कार्य को प्रमुखतः दें कल अच्छे परिणाम आपको प्रतिफल देंगे।

कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिकल एसोसिएशन ऑफ इण्डिया के संयुक्त सचिव डा0 मिथलेश कुमार मिश्रा ने कहा कि परिस्थितियां लाख बदल जायें परन्तु कार्य की गति नहीं बदलनी चाहिये क्योंकि परिस्थितियां समय के वशीभूत होती हैं लेकिन कार्य मनुष्य के अधीन होता है इलेक्ट्रो होम्योपैथी का यह एक दुःखद पहलू है कि यहां पर कामनायें तो हर एक व्यक्ति करता है लेकिन कामना की पूर्ति के लिए जो आवश्यक कार्य हैं उनसे विरत रहता है, हमें कार्य सस्कृति को पुनर्जीवित करना होगा, ऐसे संस्कारों को जन्म देना है जो कार्य को प्रमुखता दें, सिन्हा जयन्ती की सार्थकता मात्र फूल माला चढ़ाकर रस्म आदयेगी से नहीं होनी चाहिये अपितु कार्य करके होनी चाहिये, मान्यता के भूत से ऊपर उठकर कार्य करते हुए मान्यता लेने का प्रयास होना चाहिये जिन लोगों ने आज कार्य करने का संकल्प लिया है वह अपने संकल्प को पूरा करके दिखायेंगे, प्रायः देखा गया है कि संकल्प तो लोग ले लेते हैं परन्तु उसपर अमल नहीं करते हैं।

कार्यक्रम का समापन करते हुये संयोजक डा0 मिथलेश कुमार मिश्रा संयुक्त सचिव इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिकल एसोसिएशन ऑफ इण्डिया ने कहा कि हमारे सभी पूर्व वक्ताओं ने कार्य की महत्ता पर विस्तार से चर्चा की है, हमारे चिकित्सक बहुत सीधे हैं, उन्हें यह बताना चाहिये कि कार्य कैसे किया जाता है ? मेरा सुझाव है कि हर चिकित्सक को चाहिये कि वह अपने पंजीकरण को अद्यतन रखें और अपनी क्लीनिक के बाहर इलेक्ट्रो होम्योपैथिक चिकित्सक का स्पष्ट बोर्ड लगाये, इलेक्ट्रो होम्योपैथिक औषधियों का ही प्रयोग करे और इन्हीं औषधियों से रोगी की चिकित्सा करे, वैसे बोर्ड ऑफ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन,उ0प्र0 इलेक्ट्रो होम्योपैथी की स्थाई व्यवस्था के लिए प्रयास रत है, शीघ्र ही परिणाम दिखाई देंगे, डा0 मिश्रा ने कहा कि अन्तरविभागीय समिति द्वारा वांछित सूचनाओं एवं साक्ष्यों की पूर्ति हेतु संयुक्त प्रपोजलकर्ता निरन्तर प्रयासरत हैं तथा अनुपूरक प्रपोजल उनके द्वारा अन्तरविभागीय समिति को प्रस्तुत भी किया जा चुका है ऐसा विश्वास है कि इसके पश्चात भी यदि कुछ आवश्यक होगा तो उसकी भी पूर्ति उनके द्वारा की जायेगी यदि आज काम नहीं किया तो कल का इंतज़ार व्यर्थ है, आज के दिन की सार्थकता कार्य से है इसलिए प्राथमिकता के आधार कार्य को स्थान दें।

कार्यक्रम में श्री मो0 वसीम, नसीम इदरीसी, शाहिना इदरीसी,स्वालेहा, मारिया, मिथलेश कुमार , डा0 संजय द्विवेदी, राकेश कुमार, श्रीमती सुनीता मिश्रा, सुश्री तन्नू मिश्रा श्री ज़फर इदरीसी, एवं छोटू मिश्रा प्रमुख रुप से उपस्थित थे।

A Review on Electrohomoeopathic Medicinal Practice: Origin, Principles, Medicinal Plants Used and Its Current Status in India

Natural plant medicines have been used as remedies for various diseases since ages. Various medical systems have been established and practiced across the world, of which some are gained popularity and constitutional recognition while some are yet to find recognition in certain geographical areas.

Electro Homoeopathy is one such medical practice which is picking up on acceptance by the Indian population. The Electro Homoeopathy or Electropathic system of medicine has a history of nearly 150 years of existence.

In India, the system has been in practice for more than a century, this is a purely plant based medical system, discovered by C.C. Mattei of Bologna Italy.

Nature is our teacher and guides us to the various needs so as to continue our existence on this planet Earth, evidence exists for the use of medicinal plants up to 60,000 years ago but more recently, a 5000 years old Sumerian clay slab was discovered verifying the utilization of medicinal plants for the preparation of drugs.

Natural plant medicines are increasingly used as remedies for various diseases since ages,it is estimated that around 70,000 plant species, from lichens to flowering trees, have been used as medicines for treating different human conditions.

The medicinal plants have played a significant role in the most convenient and effective health care, many of the currently available drugs were derived directly or indirectly from phytochemicals.

Herbal(s) also referred to as herbal formulations, herbal drugs, herbal medicines, herbal extracts, or dietary supplem-ents can be considered important in multimodal therapeutics, Herbals often administered as powders or extracts, are mixtures of interacting compounds that can modulate multiple pharmacolgical target and provide clinical efficacy which is beyond the reach of single compound based drugs. Herbal products are complex mixtures of organic chemicals that may come from any raw or processed part of a plant, including leaves, stems, flowers, roots, and seeds, under present law(s) herbs are defined as medicines in various systems as well as dietary supplements.

Rationally designed, carefully standardized, synergistic traditional herbals with robust scientific evidence can also be used as alternatives in certain chronic diseases.

In fact, most of the herbal medicines were the only medicine, recently in 1890, 59% of the listings in the US Pharmacopeia were from herbal products.

Alternative treatment options offered by herbal plants and other natural products will reduce the burden and cost of treatment this is in line with the new 2014–2023 WHO goals to support Member States in harnessing the potential contribution of traditional medicine to health, wellness and people centered healthcare promoting the safe and effective use of traditional and alternative medicine by regulating, researching and integrating traditional medicine products, practitioners and practice into health systems.

The WHO emphasizes the importance of botanical medicines in the economic and effective management of various diseases. The human body requires essential chemicals & minerals for metabolism and all these are obtained from plants which keep the blood and the lymph in the purified state. All plants receives and store energy from sunlight, rain and earth in lesser or greater quantity in the form of chemicals, minerals and charged ionic electrolytes which can be taken out from the plants in the form of extracts and spagyric essences and used to correct the metabolic activities.

These plant extracts and spagyric essences are known as medicinal herbal drugs there are various medicinal systems evolved and developed in different geographic regions of the world based on experience and observation on traditional usage of herbal medicine and medication over a period of time, such as Ayurveda, Siddha, Unani, Chinese, Homoeopathy, Electro Homo- eopathy and other traditional or even folklore medical systems. While medicinal plants were used primarily in simple pharmaceutical formulations such as macerations, infusions and decoctions, between the 16th and 18th centuries, the demand for compounded drugs was very much on the increase, these compounded drugs comprised medicinal plants along with drugs of animal and plant origin. If the drug was prepared from a number of medicinal plants, minerals and rare animals, it was highly valued and sold at a premium.

Ayurveda is a medical system more than 5000 years old. Ayurveda means - life (Ayur) knowledge (Veda) and is a natural system of treatment which is originated in India about 5 thousands of years ago. Ayurveda theory evolved from a deep understanding of the concept of creation itself. The great Rishis or Seers of ancient India studied and understood various intricacies of human creation and life through deep meditation and other spiritual practices. The Rishis sought to imbibe the deepest truths of human physiology and health. They observed the fundamentals of life carefully organized them into an elaborate system, and compiled India's philosophical and spiritual texts, which eventually came to be called Veda or knowledge, Ayurveda was first recorded in the Veda, the world's oldest existing literature. Ayurveda greatly influenced health care practices in the East and the West by 400 AD. Ayurvedic works were translated into Chinese, by 700 AD ***The Chinese scholars came India to study medicine at Nalanda University.*** Chinese medicine, herbal knowledge and Buddhist philosophy were also impacted by Ayurvedic System.

In 12th century, the drugs were prepared by spagyric extraction method in India, and in 16th century, 'Paracelsus' (1493-1541), a Swiss priest and a pioneer of chemical medicine, prepared the drugs by taking out their essence and found them very effective and declared that small doses of "What makes a man ill also cures him" anticipating Homoeopathy, but it was Hahnemann who gave it a name and laid out its principles in the late 18th century. At that time, mainstream medicine employed such measures as blood letting and purging, used laxatives and enemas, and administered complex mixtures, such as Venice treacle, made from 64 substances including opium, myrrh, and viper's flesh. Such measures often worsened symptoms and at times even proved fatal. Hahnemann rejected such methods as irrational and not advisable, instead, he favored the use of single drugs at lower doses and promoted animmaterial, vitalistic view of how living organisms function, believing that diseases have spiritual, as well as physical causes. Hahnemann (1755-1843) believed that large doses of drugs that caused similar symptoms would only aggravate illness, and therefore advocated extreme dilutions of the substances , He also established a technique for making dilutions that he believed would preserve a substance's therapeutic properties while removing its harmful effects He gathered and published a complete overview of his new medical system in 1810 a book namely " The Organon of the Healing Art", whose 6th edition was published in 1921, is still used by Homeopaths , by 1900, there were 22 Homoeopathic Colleges and 15,000 practitioners in the United States. In India a Central Council for Research in Homoeopathy was established in 1978.

Uniform education in Homoeopathy was enforced by the Indian Government in 1983. Dr. Honigberger introduced Homoeopathic method of treatment in India in 1839. On 16th Feb. 1867 Dr. Mahendra Lal Sircar, the then great Allopathic Physician and upholder of Indian Science announced publicly about his conviction on Homoeopathic system of medicine. In 1881 "Calcutta Homoeopathic Medical College" was established in Calcutta. This institution made a great name and its popularity spread all over India and the students used to come here to learn Homoeopathy. Respectable persons and intellectual giants of India continued to support Dr. Hahnemann's new science of therapeutics.

After Independence the Indian Government constituted a number of committees and commissions to recognize Homoeopathy, in 1973 Central Council of Homoeopathy (CCH) was established to regulate Homoeopathic education and practice,various research and studies performed in India proved the efficacy of Homoeopathy. Uniform education in Homoeopathy was enforced by the Indian Government in 1983. At present Homoeopathic medical treatment is accepted far greater in India than any other country and co-exist with other medical systems.

In 19th century, Italian Count Ceaser Mattei (1809-1896), borrowed from Paracelsus, the process of preparing the vegetable substances by means of a more or less complicated mode of extraction, distillation, fermentation, cohobation and also the final combination of a number of ingredients with similar or supplementary effect to form a complex medicinal unity. Presently, hundreds of Electro Homoeopathic institutions and lakhs of practitioners and millions of beneficiaries exist all over the world, including India. In the course of evolution of human medical and therapeutic experience and knowledge, different medicinal systems were developed. In the present article we have reviewed to provide history, principles, medicinal plants used, fundamental difference between Homoeopathy and Electro Homoeopathy and current status of Electro Homoeopathic medicine in India.

To be continued